

“गमो अरिहंताणं” का अर्थ

[श्री ० दीगलाल शास्त्री]

समस्त जैन समाज में चाहे वह त्रिगम्बर हो या श्वेताम्बर, मन्दिर मार्गी हो या स्थानकवासी; सर्वत्र गमोकार मन्त्र अर्पना खास स्थान रखता है। बच्चों से लेकर बुढ़ तक नित्य ही बड़ी भाँक के साथ इसका त्रिकाल-स्मरण करते हैं, आचार्यों ने उसे अनादि मूलमन्त्र और करोड़ों श्लोकों वाले दृष्टिवाद भंग का सार कहा है सचमुच जब हम इसके प्रत्येक पद के अर्थ को गंभीरता से देखते हैं तो हमें आचार्यों के उक्त कथन का महत्व दृष्टि-गोचर हुए बिना नहीं रहता। इसके प्रभाव से परम पद पाने वालों की कथाओं से अनेकों शास्त्र भरे पड़े हैं। महर्षियों ने ठीक ही कहा है कि—

एसो पंच गमोक्कारो सव्वावप्पणासमो ।

मंगलाणं च सखेसि पढमं हवइ मंगलं ॥१॥

अर्थात्—यह पंच नमस्कार मन्त्र सर्व पापों का नाश करने वाला है और सभी मंगलों में प्रथम मंगल है।

“गमो अरिहंताणं” यह उसी गमोकार मन्त्र का प्रथम पद है। शास्त्रों में यह पद अनेकों पाठ श्रेणियों के साथ नाना अर्थ मय देखने में आता है, जिनपर यहां क्रमशः विचार किया जाता है।

“गमो अरिहंताणं” अरिहंत यह प्राकृत भाषा का शब्द है, जिसकी संस्कृत छया अहन्, अरहोन्तर, अरयान्त और अरहयत् होती है। हम चारों ही के अर्थ का यहां सम्राण विचार करते हैं—

(१) अहं धातु का अर्थ पूजा के योग्य होता

है। जिसके अनुसार अतिशय युक्त पुत्रा के योग्य होने से “अरहन्ते” कहलाते हैं। क्योंकि गर्भ, जन्म तप, ज्ञान और निर्वाण कृत्याणकों में देवों द्वारा की गई पूजायें, देव भयुर और मानवों की प्रातः पूजाओं से अधिक हैं, अतिशय युक्त हैं, इस लिये अतिशयों के योग्य होने से “अरहन्ते” नाम यथार्थ है।

जैसा कि धवल सिद्धान्त में कहा है—

“अतिशयपुत्रार्हत्वादर्हन्तः, स्वर्गावतरण-जन्मा-भिषेक-परिनिष्कस्य-केवलज्ञानोत्पत्ति-परिनिर्वाणेषु देवकृतानां पूजानां देवासुरमानवप्रातःपूजाश्रयोऽधिक-त्वात्तिसयानामर्हत्वा-योभ्यत्वादर्हन्तः।”

अरिहंति वंद्येण गमंसणाणि, अरहन्ति पूयसक्कारं ।
अरिहंति सिद्धिगमणं, अरहंता तेण उच्चंति ॥६२॥

मूलाचार

अरिहंति वंद्येण गमंसणाणि, अरिहंति पूयसक्कारं ।

सिद्धि गमणं च अरिहा, अरहंता तेण उच्चंति ॥६२॥

विशेषावश्यक भाष्य

भावार्थ— बंदना और नमस्कार के योग्य हैं, पूजा और सत्कार के योग्य हैं, और सिद्धि गमन के योग्य हैं इस लिये अरिहंत कहे जाते हैं।

(२) रहः नाम एकान्त या गोच्य का है, सो समस्त निकटवर्ती, दूरवर्ती, सूक्ष्म और स्थूल पदार्थों के समूह को प्रत्यक्ष हस्तामलकवत् देखने जानने से जिन के कुल भी एकान्त या शुभ नहीं रहा है इस कारण से भी “अरहंत” ऐसा नाम यथार्थ है।

न विद्यते रइ एकान्तो गोच्यमस्य, सकलसन्निहित-अवद्वितस्थूलसूक्ष्मपदार्थसायसात्कारित्वावित्य-रिहाः स्थानांग सूज ।

“अविद्यमानं रह एकात्मरूपो देशोऽन्तस्त्व मयं गिरियु रादीनां सर्वेषु देवता समस्तत्रस्तुस्तोमगत-प्रचक्षुन्त्वस्याभावेन येषां तेऽहोन्तरः । भगवती सूत्र

(३) अरिहान्त ऐसी संस्कृत द्वायाके अनुसार यह अर्थ निकलता है कि—

रथ अर्थात् प्रकृत में उपलक्षण से “समस्त परि-प्रह” का जिन के संबंधा विनाश हो गया है, ऐसे वीतराग सर्वज्ञ देव को अरहंत कहते हैं ।

“अविद्यमानो रथः स्पन्दनः सकलपहिप्रहोपलक्ष-णभूतः भक्तश्च विनाशो जराद्युपलक्षणभूतो येषां तेऽरिहान्ताः” भगवती सूत्र ।

अथवा—जिनका आत्मा रूपी रथ अप्रतिहत शक्ति वाला होने से कहीं रुक नहीं सकता, अर्थात् प्रेलाप्य और अलोक को भी जानता है ।

(४) “अरहंत” शब्द का अर्थ अर्थात् भी होता है, जिस के अनुसार यह अर्थ भी निकलता है “राग-द्वेष के कारणभूत त्रिलोकवर्ती अनंत पदार्थों के ज्ञाता दृष्टा होने पर भी किसी भी पदार्थ में आसक्त नहीं, वीतरागी स्वभाववाले हैं, इससे अरहंत कहलाते हैं ।”

“कश्चिदपि आसक्तिमगच्छत्सु ज्ञीणरागत्वात् प्रकृशरामादिहेतुभूतमनोकेतरविषयसम्पर्केपि वीत-रागत्वान्निक स्वस्वभावं अत्यजन्तोऽहेतः”

भगवती सूत्र

अथवा—“गमो अरिहंताणं” ऐसी भी पाठ प्रच-लित है जिस के अनुसार अर्थ होता है कि—अरि अर्थात् कर्म शत्रु के नाश करने से अरिहंत कहते हैं ।

“अरिहन्नादरिहंतः, नरक तर्पककुमानुप्रेषता-

वासगताशेषदुःखप्राप्तिनिमित्तत्वादिभिर्दोहः । तस्यारेहननादरिहंतः” धवल सिद्धान्त ।

मोह रज अंतराय हृद्यया गुणादो य गाम अरि-हंतो ॥ मूलाचार

अथवा—राग, द्वेष, कर्माय, पापों इन्द्रियों के विषय, परिषह और उपसर्ग उन के विनाश से भी अरिहंत कहे जाते हैं । जैसा कि लिखा है—

राग होस कसाए य, इन्द्रियाणि य पंच य । परिसेह उवसगे, णासयंतो गमोरिहा ॥ मूलाचार
रागहोस कसाए य, इन्द्रियाणि य पंच विपरीसहे । उवसगे नामयंता; नमोरिहा तेण वुच्चंति ॥

विशेषावश्यक भाष्य

इन्द्रिय विसय कसाए, परीसहे वेयणा उवसगे । वए अरिणो हंता अरिहंता तेण वुच्चंति ॥ १६६

आवश्यक भाष्य

अहं विहं पि य कम्मं, अरिभूयं होए सव्व जीवाणं तं कम्ममरिं हंता, अरिहंता तेण वुच्चंति ॥ १६७ ॥

आवश्यक भाष्य

अथवा—रज अर्थात् आवरण के नाश करने से भी अरहंत कहाते हैं, क्योंकि ज्ञानावरण दर्शनावरणा-कर्म रज के समान बाधा और अंतरंग समस्त विकार के विषय भूत अनंत अर्थपर्याय और व्यंजन पर्याय युक्त वस्तुओं को विषय करने वाले ज्ञान और दर्शन को आवरण करने से रज कहे जाते हैं । इसी प्रकार

मोह भी रज है, क्योंकि जैसे रज से व्याप्त मुल वाले लोगों में कार्य की मंदा देखी जाती है, उसी प्रकार मोह से जिनका आत्मा व्याप्त है—उनमें भी आत्मो-पयोग की मंदा या कुटिलता देखने में आती है, इस लिये रज कर्म रूप ज्ञानावरणादि कर्मों के अभाव से

भी अरहंत कहलाते हैं । जैसा कि कहा है—

“रजो हननाद्वा अरिहंतः, ज्ञानद्वगावरणानि रजा-सीव बहिरङ्गास्तरंगाशेषविकालगोचरानन्तार्थद्वंजन-परिणामात्मकवस्तुविषयबोधानुभवप्रतिबंधकत्वाद्-जांति । मोहोऽपि रजः; अम्परजसा पुरितानानामि-मिव भूयो मोहावच्छात्मनां जिह्मभावोपलम्भात्”

धवल सिद्धान्त

अथवा—रहस्य अन्तराय कर्म का नाम है, उस के क्षय से भी अरहंत नाम कहा जाता है । अंतराय का नाश तीन घातिया कर्मों के नाश के साथ ही नियम से होता है, इस लिये अविनाभाव सम्बन्ध से यह अर्थ निकला कि—जिनने चार घातिया कर्मों का नाश कर अघातिया कर्मों को भी निःशक्त कर दिया है वे अरहंत कहलाते हैं ।

“रहस्यमन्तरायः, तस्य शेषघातित्रितयविना-

शविनाभाविनो भ्रष्ट बीजवन्निःशकीकृताघाति-कर्मणो हननादरिहंतः” धवल सिद्धान्त

अथवा—“गमो अरिहंताणं” ऐसी भी पाठ देखने में आता है । यह घातुका अर्थ अंकुर उगना होता है । जो जिनका भव रूप अंकुर अब नहीं उगेगा, उन्हें अरहंत कहते हैं । क्योंकि कर्मरूप बीज के जल जाने पर फिर संसाररूप अंकुर पैदा नहीं होता है, कहा है—

“न रोहति भूयः संसारे समुत्पद्यते, इत्यकहः, संसार कारणानां कर्मणां निर्मूलकार्यं कथितं त्वात् ॥

भगवती सूत्र और प्रबचन सारोडार

कर्मबीजे तथा दग्धे, न रोहति नवांकुरः “दग्धे बीजे यथात्थं; प्रादुर्भवति नवांकुरः ।

राजवातिक और तत्त्वार्थ सार

उक्त प्रकार के अरहंतों को नमस्कार हो ।

मंकी के लोकोत्पत्तिकापी नामक हीरालाल जी शर्मा उस्ताद (1)

अरहंत का अर्थ

सारी जिन लक्षणों में चाहे वह दिगम्बर हो या श्वेताम्बर; मंदिरभागी हो, या स्थानक नास्ती; णमोकार मंत्र अपना स्वयं स्थापन रखता है। मन्त्रों से लेकर बहुत तक नित्य ही बड़ी शक्ति के साथ स्तंभिका-स्मरण करते हैं। आचार्यों ने इसे अनादिमल मंत्र और करोड़ों श्लोकों वाले दृष्टिबाध अंग का सार कहा है। सच्चिदानन्द का स्वरूप प्रत्येक पद है अर्थ की गंभीरता से देखते हैं, तो हमें आचार्यों के उक्त कथन का महत्त्व दृष्टि गोचर (दृश्यमान नहीं रहता) इतने प्रभाव से परम पर प्राप्ति करने वालों की कथाओं से अनेकों गालत भरे पड़े हैं। महाशक्तियों ने भी ही कहा है कि -

एते पंच णमोकारो सख पावप्पणासणो ।
 अंगलाणं च सखेसिं घमं एव अंगलं ॥ १ ॥

अर्थात् यह पंच नमस्कार मंत्र सर्व पापों का नाश करने वाला है और सभी अंगलों में प्रथम अंगल है।

~~णमोकार मंत्र के प्रत्येक पद के अर्थ का क्रमशः सप्रमाण और समुचित विचार करने पर, पहिले यही पद 'नामो पाठियों और विविध अर्थों के साथ उपलब्ध होने के लिये प्रथम पद का अर्थ करते हैं -~~

'णमो अरहंतायां' 'अरहंत' यह प्रकृत भाषा का शब्द है जिसकी संस्कृत धारा अहंत, अरहेतर, अरदान्त, और अरहयत होती है। यहां नारों ही अर्थों पर विचार किया जाता है -

(१) 'अहं' धातु, योग्य होना या पूजा के योग्य होना। इस अर्थ में प्रयुक्त करती है। इस अर्थ के अनुसार 'अतिशय उक्त पूजा के योग्य होने से 'अरहंत' कहलाते हैं। यद्यो कि गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान और निर्बीज कल्याणों में देवों द्वारा की गई पूजा में, देव, असुर, और मानवों को प्राण्य पूजाओं से अधिक है, अतिशय उक्त है; इसलिए अतिशयों के योग्य होने से 'अरहंत' यह नाम प्रयाच्य है।

जैसा कि धवल लिहात्त में कहा है -
 " अतिशय पूजाईको दहेत्तः । स्मृतावतरणप्रत्माशिवे च परिनिष्ठमणः केवलज्ञानोत्पत्ति-परिनिर्वाणे मुद्देय कृतानां पूजायां देवादे (सुर मानव प्राण्य पूजाभ्योऽपि यत्त्वा दतिशयात्तामहेत्याद्योग्यत्वा दहेत्तः ।"

अरिहोति बंदण ठामंसणागि, अरिहोति इयसकारं ।
अरिहोति सिद्धि गमनं अरहंता तेण उच्चंति ॥ ६२ ॥

मलानार

अरिहोति बंदण ठामंसणागि, अरिहोति इयसकारं ।

अरिहोति सिद्धि गमनं अरिहा, अरहंता तेण उच्चंति ॥

विशेषावयवकामध्या ॥ ६२ ॥

अर्थात् - नरना ओर नमस्कार के योग्य है, राजा ओर लकार के योग्य है, ओर सिद्धि गमन के योग्य है इसलिए अरहंत प्रजेजते हैं।

(२) 'अरहंता' एकान या गोप्य का है, जो समस्त निरुद्ध-वर्ती, दुःखती, रक्षक ओर स्थूल पदधर्मों के समूह को प्रत्यक्ष-हस्तामलक बल देकर जाने से जिनके कुछ भी एकान या गुप्त नहीं रहते हैं उक्त कारण से भी 'अरहंत' ऐसा नाम प्रदायी है।

" न विद्यते रह एकानो गोप्यमस्य, सकल सन्निहितव्यवहित-स्थूल सूक्ष्म पदधर्मोपेक्षात्कारित्वादित्यरहाः "

'स्थानाहु-सूत्र'

'अविद्यमानं रह एकानरूपो देशोऽन्तस्त्रमध्यं गिरिगुहासी-मां सर्ववेदितया समस्त यस्तुस्तोमगत प्रच्छन्न त्वस्त्राभावेन येषां तेऽरहो नारः ॥

'भगवती-सूत्र'

(३) 'अरहंत' उक्त प्रकृत शब्द की 'अरफाना' ऐसी भी होतूतया-या होती है, जिसने अनुत्तर अर्थात् निकलता है कि -

रथ अर्थात् प्रकृत में उपलक्षण के समस्त परिग्रह उक्तदा जिनके सर्वथा विनाश हो गया है, ऐसे वीतराग सर्वज्ञ देव को 'अरहंत' कहते हैं।

" अविद्यमानो रथः स्पन्दनः सकल परिग्रहोपससरो भूतः अन्तस्त्र विनोशो नरा सुपल क्षणभूतो येषां तेऽरफानाः "

'भगवती-सूत्र'

अथवा - जिनका आत्मरूप रथ, अप्रतिहत शक्ति वाला - अतना भीम बाला होने से कहीं रुक नहीं सकता, अर्थात् त्रैलोक्य ओर अलोक का भी जानता है, इस कारण से भी 'अरहंत' ऐसी संज्ञा सार्थक मानी गई है।

(*) 'अरहंत' शब्द का अर्थ है 'अर्थहीन होता है', जिसके अनुसार यह अर्थ निरमलता है। राग-रूप के कारण भूत तैल्लो व्ययती अनन्त-पदा धेरी के ज्ञाता दृष्टा होने पर भी किसी प्रकार की 'आसक्त नहीं' होता बल्कि अर्थहीन, अपना वीतरागी स्वभाव नहीं छोड़ने वाले होने से अरहंत कहलाते हैं -

" कश्चिदपि - आसक्तिमग्न्यप्यस्य सीतशगत्वात् प्रकृत्य रागादिहेतुभ्रतमनोभेदा विषयसम्पत्तेः । अरि वीतरागत्वादि सं स्वभावो अल्पजन्तेऽहन्तिः "।

'भावती सूत्र'

अथवा -

'गमो अरिहंतोऽयं'। ऐसा भी पाठ प्रचलित है जिसके अनुसार अर्थ होता है कि 'अरि अर्थात् क्रमशः क्रमशः नाश करने से अरि हंत'। ऐसा नाम है।

" अरिहन्तादरिहंतः, तरुत्तरियकुमानुष प्रेताकासगताशेषः । दुरव प्राप्तिनिमित्तत्वादारिहोः । x x तस्मादेहंतादरिहंतः "।

पद्योक्तं सिद्धान्तः ।

* अथवा - राग, द्वेष, कषाय, पांचों इंद्रियों के विषय, प्रीति, अहं, उपसर्ग इनके विनाश से ही अरिहंत बने जाते हैं। जिसे कि कहा है -

रागदोष कसाय य इंद्रियाणि य पंच य ।
परितहे उवसगो गामयंतो गमोरिहा ॥

मूलाचारः ।

इंद्रिय विषय कसाय परिसहे वेपणा उवसगो ।
ए ए अरिणो हंता अरिहंता तेण बुद्धंति ॥ १९९ ॥

आवश्यक भाष्यः ।

रागदोष कसाय य इंद्रियाणि य पंच विपरीसहे ।
उवसगो नामयंता गमोरिहा तेण बुद्धंति ॥

विशेषात् आवश्यक भाष्यः ॥

* मोहरज अंतरेण हणंण मुणा दो यणाम अरिहंतो ॥

मूलाचारः ।

अद्भुत विहं पिय कम्मं अरिभयं हंर सत्त्वजीवाणं ।
ते कम्ममसिं हंता अरिहंता तेण बुद्धंति ॥ २२० ॥

आवश्यक भाष्यः ।

अथवा - रज अर्थात् आवरण के नाश करने से भी 'अरहंत' कहते हैं। क्योंकि ज्ञानावरण दृष्टानावरण कर्म रज के समान वास्तु और अनारंग समस्त निकाल है विषय भ्रत, अनन्त अचे पर्याय और व्यञ्जन पर्याय दुक्त, वस्तुओं को विषय करने वाले ज्ञान और दृष्टि को आवरण करने से रज कहे जाते हैं। इसी प्रकार मोह भी रज है। क्योंकि जैसे रज से व्याप्त सुख नाले लोगों के कार्य भी मन्दता देखी जाती है, उसी प्रकार मोह से जिनका आत्मा व्याप्त है उनमें भी आत्मोपयोग भी मन्दता या बुद्धि मत्ता देखने में आती है। इसलिए रज स्वरूप ज्ञानावरणों के कर्मों के नाश व से भी 'अरहंत' संज्ञा यथायथ है। जैसा कि कहा है -

" रजो ह्यनादा अरिहंतः । ज्ञानद्वयकरणान्नि रजोसि-
 व विहरिणात्तरंगाशेष त्रिकल गोचरानन्ताथ व्यञ्जन परिणामा-
 त्कवस्तु विषय बोधानुभव प्रतिबंध कृत्या प्रजासि ।
 मोहोऽपि रजः, तस्य रजसा हरिताननागमिब भ्रयो मोहा-
 वरुहात्मनां जिह्म भावोपलम्भान् ।"

धवल सिद्धान्त

अथवा - रहस्य अन्तराय कर्म का नाम है, इससे रहस्य से भी 'अरहंत' नाम कहा जाता है। अन्तराय का विनाश तीन चातिया कर्मों का अधिकार है अर्थात् तीन चातिका कर्मों के नाश होने के साथ ही नियम से अन्तराय कर्म का नाश होता है, जो जिस समय अन्तराय के नाश का उल्लेख कि भाग्य कि उसके स्वयं ही तीन चातिया कर्मों का नाश हो (स्वतः सिद्ध) हो जाता है, इसलिए भी अन्तराय के विनाश करने से 'अरहंत' नाम पडता यथायथ ही है। जैसा कि कहा है -

" रहस्यमन्तरायः, तस्य शेष चातिस्रितय विना
 शाश्विताभावितो अष्ट बीज यन्निःशक्तीकृता चातिका कर्मो
 ह्यनादरिहन्तः ।"

धवल सिद्धान्त

अथवा -
 ' नामो अरुहंताणः । ऐसा भी पाठ देखने में आता है, यह पाठ आयः पूषेताम्बरो हे जसिद्ध सूत्रागमो मे' उपलब्ध है 'रुह' धातु का अर्थ 'अंडुर' होगा 'होता है', जो जिनका भय अर्थात् जन्म रूप अंडुर अणु नहीं होगा उन्हें 'अरहंत' कहते हैं क्योंकि कर्मरूप बीज के जल जाने पर फिर -

संसार रूप अक्षर नहीं पैदा हो ता है । जसा कि कहा है
। न रोहति, भयः संसारे लघुपयले, इत्यरुहः, संसार-
कारणानां कर्मणि निवृत्तिकाषं कथितत्वात् ।

भगवती शक्त और उच्चतम कारणेद्वारा
दृष्टे कीजे यथात्मनं प्रादुर्भावति नादुरः ।
कर्मवीजे तथा दृष्टे न रोहति यथादुरः ॥

राजवासी के और तत्त्वचिन्ता ॥

भद्रेश्वर भवन दिनोदयसिद्धि उक्ति
२३/७/३६

श्री मान्, दिव्योदयजी सा०

तानेह जयजिनेन्दु

आपके इरादा भजे गए । जसा कि
भास्कर और ग्रन्थ सूची की प्राप्ति से हमें परमात्म
ज्ञान हुआ । एतदर्थ आपको कोटिचः धन्यवाद
लिखे अनुसार 'आहं' का अर्थ शीघ्र
एक लोप भजेता है । आशा है यह तिरुभावेचम
पुस्तक होने वाले भास्कर में उकाशित होजाया

आज दिन श्री-दीपल के १०० पत्र
वापिस भजे हैं रात्रिसे, तो आपको मिलने पर
परंच ले स्तम्भिय करें । आगे भी जद्य आकाशक
ता होगी, तब देखा जायागा । इस प्रति में
भने को स्थानों पर पाठ छूट गया है जिसे मैंने कई
स्थानों पर दो लालसाडी ले नोट की दिया है
तमसाभव ले उद्यत पत्र न की लता । अर्थात्
इसके उकाशत की प्राप्ति योजना वा ही है
जिससे लोपत साधनकी सभी अक्षरोंके दूर हो
जायेगी

हैं ० लोपचट्टी का बहुत परिष्कृत
अतः कर सती आदि विजयाश्रमों । इत्यन्त भी प्रयत्न
करेंगे पर इनकी शाहक होत वा निश्चित तमाकि
नयन लेना से कोचित भी जयागा । जिस अक्षर
लोप-शाहक अक्षर भजे । यदि भास्कर लया आता
होगा, तो मैं भी निमग्न बद्ध लोप देलूंगा ।
मन्दीप
२३/७/३६